दिनांक 21.06.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

सर्व शक्तियों सर्व गुणों से करने वाले मालामाल
त्रिमूर्ति के रचयिता देखने आए बच्चों का हाल

बाप के बनकर बच्चों तुम बन गए तक़दीरवान
सेवा के लिए करो अपनी विशेषता की पहचान

अपनी विशेषताओं को ईश्वरीय सेवा में लगाओ
सहज सरल स्वतः योगी अपना जीवन बनाओ

बाप शिक्षक और सतगुरु की श्रीमत अपनाओ
फरमानबरदार ईमानदार आज्ञाकारी कहलाओ

तीनो सम्बन्ध निभाकर त्रिमूर्ति स्नेही बन जाओ

सर्व प्राप्तियों का अनुभव जीवन से झलकाओ

कहलाते हो यदि तुम सर्वशक्तिमान की सन्तान

अपने जीवन से मिटाओ व्यर्थ का नाम निशान

संस्कार, स्वभाव व संकल्प श्रीमत पर चलाओ

सारे विश्व पर शासन करने का अधिकार पाओ

स्वयं की चेकिंग है तक़दीर बदलने का आधार

भविष्य में तुम पाओगे महान पद का अधिकार

सर्व सिद्धि दाता ज्ञानसूर्य ने बच्चों में क्या देखा

हर सितारे के मस्तक पर देखी तकदीर की रेखा

बच्चों की बुद्धि की लकीर है स्पष्ट और विशाल

एकरस स्थिति से निर्विघ्न बनकर किया कमाल

ब्राह्मण जीवन की आयु का महत्व सबने जाना

अपनी तकदीर की रेखा को बच्चों ने पहचाना

सर्व शक्तियों के अधिकारी बनकर कर्म करना

माया के आने वाले सभी विघ्नों को दूर करना

सर्व सिद्धियाँ पाने का तुम खुद में नशा चढ़ाओ

सेवा में सर्व सिद्धियों का उपयोग करते जाओ

मैंपन मिटाकर सेवा प्रति निमित्त भाव जगाओ

साक्षी दृष्टा बनकर सजाओं से खुद को बचाओ